11

खेल और प्रारंभिक अधिगम

क्या आपने कभी छोटे बच्चों की खेल क्रियाओं का नजदीक से अवलोकन किया है? आपने क्या विशेषताएँ नोट कीं? क्या आप जानते हैं कि इन छोटी सरल खेल गतिविधियों का एक मनुष्य के पूरे जीवन में क्या महत्त्व होता है? पिछले पाठों में आपने प्रारंभिक बाल्यावस्था में बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा के महत्व को समझा था। बच्चों को अन्वेषण करना, खोजबीन करना और खेलना बहुत पसंद होता है और यदि उन्हें सही वातावरण मिले तो इनसे उनका उचित संज्ञानात्मक, सामाजिक-संवेगात्मक और शारीरिक विकास सुनिश्चित होता है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था में बच्चों की प्रत्येक गतिविधि बहुत आकर्षक होती है। बच्चा जब अपने हाथों और पैरों को घुमाकर खुश होता है और किलकिलाता है, तब देखने वाले आश्चर्यचकित हो जाते हैं। यह सभी खेल की शुरूआत हैं तथा प्रत्येक स्थान पर बच्चे के जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। सभी समुदाय बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के खिलौने बनाते हैं, जैसे कि झुनझुने, मोबाइल, लटकने वाले झूमर, जो बच्चों में खेलने एवं गतिक क्रियाओं हेतु रुचि को बढ़ाते हैं तथा भौतिक वातावरण से संबंध स्थापित करते हैं। स्व-प्रेरक कार्य शिशुओं के खेल बन जाते हैं तथा बच्चों के समग्र विकास हेतु आवश्यक होते हैं।

जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है उनमें खेलने का स्वभाव विकसित होने लगता है और वे लोगों को प्रतिक्रियाएँ देने लगते हैं। वे अपनी इच्छानुसार क्रियाएँ करने लगते हैं तथा नवीन प्रयोग एवं खोजबीन भी करने लगते हैं। बच्चे किसी चीज को खींच सकते हैं, फेंक सकते हैं या फिर किसी चीज को ट्रेन की तरह ढकेल सकते हैं। यह वह कार्य हैं जिनमें बच्चे अपने विचार एवं कल्पनाशीलता प्रदर्शित करते हैं। खेलों के द्वारा बच्चे विभिन्न प्रकार की भावनाओं का अनुभव करते हैं और अपने आस-पास की चीजों को जानना सीखते हैं।

खेल सार्वभौमिक हैं तथा हम सभी सहमत हैं कि प्रारंभिक बाल्यावस्था में खेल भौतिक-सामाजिक संसार के रहस्यों को सुलझाने, खोजने तथा सीखने के मार्ग तैयार करते हैं। बाल्यावस्था के दौरान, विभिन्न खेल गतिविधियों के द्वारा नये कौशल विकसित होते हैं या अर्जित किये जाते हैं।

इस अध्याय में आप बच्चे के प्रारंभिक अधिगम के शुरूआती वर्षों में खेलों के महत्त्व के बारे में सीखेंगे और जानेंगे कि खेल कैसे बच्चों के आगे के विकास में सहायक हैं।

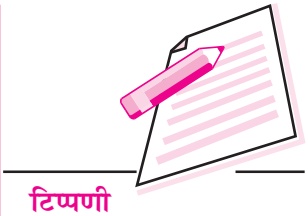

टिप्पणी

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- खेल क्या है, चर्चा करते हैं;
- खेलों के महत्त्व की व्याख्या करते हैं;
- विभिन्न प्रकार के खेलों में अंतर करते हैं;
- खेल कैसे विकास करता है, उसका वर्णन करता है;
- आंतरिक और बाह्य खेल के लिए उपयुक्त अधिगम उपकरणों एवं सामग्री की पहचान करते हैं; और
- विविध आयामों विकासोपयुक्त खेल आधारित गतिविधियों की पहचान करते हैं।

11.1 खेलों की परिभाषा

बच्चों के खेलों को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है किंतु हम कह सकते हैं कि यह एक सृजनात्मक प्रक्रिया है जिसमें एक बच्चा स्वयं को किसी बाहरी थोपे गए लक्ष्यों से स्वतंत्र रखकर अपने मन और शरीर का प्रयोग करता है। प्राय: यह कहा जाता है कि खेल स्वयं अपने साथ, दूसरों के साथ, वस्तुओं के साथ संलग्नता या कार्य है जिसका बच्चे द्वारा चयन किया जाता है। खेल, गैर जोखिम तरीकों द्वारा खोजबीन, प्रयोग तथा अनुभव हेतु अवसर प्रदान करता है। पियाजे के अनुसार खेल में शुद्ध रूप से व्यावहारिक आनंद की प्रतिक्रियाएँ ही शामिल होती हैं। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है खेल के नियम एवं शर्ते निर्धारित होती हैं जो खिलाड़ियों द्वारा उनकी सुविधानुसार थोपी जाती हैं। दूसरी तरफ फ्रोबेल ने खेल को कोई मामूली चीज़ न मानकर अत्यंत गंभीर और बहुत महत्व माना है।

खेल की कुछ निम्नलिखित परिभाषाएँ हैं–

खेल आनंदयुक्त, स्वाभाविक, रचनात्मक क्रिया है जिसके अंतर्गत मनुष्य अपनी सर्वाधिक अभिव्यक्ति प्राप्त करता है।	***रॉस***
खेल आन्तरिक गतिविधियों के गंभीर उद्देश्यों के बिना सहज अभ्यास है जो आगे चलकर जीवन के लिए आवश्यक होंगी।	***ग्रॉस***
खेल एक स्वतंत्र, आत्मनियंत्रित क्रिया है, जिसका एक स्वाभाविक लक्ष्य होता है, जो आंतरिक प्रेरणा से निर्देशित और आरंभ होता है और जो खेलने की क्रिया द्वारा अपने आप ही संतुष्टि प्रदान करता है।	***स्टर्न***
खेल निरंतर बहती धारा या बढ़ते पेड़ की अंतहीन गतिविधि के सदृश होते हैं। खेल बच्चे का कार्य है।	***मांटेसरी***
आनंद के अतिरिक्त किसी अन्य उद्देश्य की ओर निर्देशित कोई भी गतिविधि सही मायने में खेल नहीं हो सकती।	***हरलॉक***

टिप्पणी

11.2 खेल का महत्व

बच्चों के वृद्धि और विकास के लिए खेल एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। खेलते समय बच्चे अपने अंगों-विशेषकर हाथ-पैरों को चलाते हैं, नये शब्दों को सीखते हैं और जब वे दूसरे बच्चों के साथ खेलते हैं तो बहुत आनंदित होते हैं। दूसरे बच्चों की उपस्थिति खेलों के सामाजिक महत्व को बढ़ा देती है। खेल के दौरान बच्चे, अपने साथियों से संवाद करते हैं, जिसके द्वारा उनके सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। खेलों के द्वारा बच्चे काम करने का तरीका, आज्ञापालन और शिष्टाचार सीखते हैं। संवेगात्मक विकास खेल का परिणाम है।

जब बच्चे साथ खेलते हैं तो वे अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, वे आपस में चर्चा, तर्क-वितर्क तथा अपने विचारों एवं अनुभूतियों को साझा करते हैं। यह सब उनके भाषायी विकास के लिए आवश्यक हैं। इससे बच्चों की तार्किक, वैचारिक तथा कल्पना शक्ति बढ़ती हैं। बच्चे एक-दूसरे से अच्छी आदतें तथा जीवन मूल्य भी सीखते हैं। बच्चे खेलों के द्वारा विभिन्न वस्तुओं, लोगों तथा पशुओं की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं, जो उनके सामाजिक, संवेगात्मक और संज्ञानात्मक विकास में सहायक होता है। बच्चों को शिक्षा देने के लिए खेल एक स्वाभाविक तरीका है। इनके माध्यम से वे अपनी गतिविधियों के प्रभाव को तुरन्त समझ जाते हैं।

खेल एक सार्वभौमिक घटना है। इससे बच्चों के संपूर्ण विकास और वृद्धि में लाभ होता है। खेल की सबसे महत्त्वपूर्ण उपयोगिताएँ इस प्रकार है:

(i) **शारीरिक उपयोगिता:** बच्चे के शारीरिक विकास में खेल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। खेल के दौरान बच्चे के शरीर के विभिन्न भाग क्रियाशील हो जाते हैं। यह अतिरिक्त ऊर्जा को निकालने का माध्यम होते हैं। यदि ऊर्जा को सही ढंग से खर्च न किया जाए तो बच्चा चिड़चिड़ा और बेचैन हो जाता है। इससे भी अधिक, यह माँसपेशियों के समन्वयन, हाथ-पैरों की उद्देश्यपूर्ण गति में सहायता करते हैं। जिससे शरीर की सामान्य बाह्य-आकृति निश्चित होती है।

(ii) **सामाजिक उपयोगिता** - खेल, मित्रवत संबंध विकसित करने और सहयोग सीखने में बच्चों की मदद करते हैं। खेल के दौरान बच्चों का अधिक-से-अधिक सामाजिक संपर्क होता है और इस प्रकार वे सामाजिक शिष्टाचार, व्यवहार और अपने मित्रों के साथ समस्या समाधान के तरीके सीखते हैं।

(iii) **संज्ञानात्मक उपयोगिता** - खेल, बच्चों को अवलोकन करने, ध्यान केंद्रित करने और प्रयोग करने और उनकी समस्याओं का समाधान करने के अवसर प्रदान करते हैं। खेल उनके कौशलों, शब्द भंडार, अभिव्यक्ति, कल्पना और सृजनात्मकता का विकास करते हैं।

(iv) **नैतिक उपयोगिता** - बच्चा क्या सही है क्या गलत, बड़ों का आदर कैसे करें, समान आयु वर्ग के बच्चों, मित्रों और खेल के साथियों के साथ कैसे व्यवहार करें, आदि सीखता है।

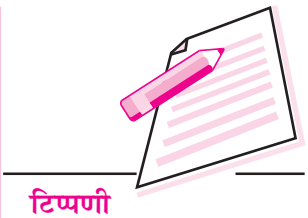

टिप्पणी

(v) **उपचारात्मक उपयोगिता** - खेल बच्चों को दबे हुए संवेगों को निकालने में सहायता करते हैं। शर्मीले बच्चे, दूसरे बच्चों के साथ खुश रहना सीखते हैं, जबकि आक्रामक बच्चे धैर्यपूर्वक अपनी बारी का इन्तज़ार करना सीखते हैं। अति स्पर्धा करने वाले हार या नुकसान सहन करना सीखते हैं, असुरक्षित महसूस करने वाले बच्चे खेलों के माध्यम से आत्म-सम्मान और दूसरों का सम्मान करना सीखते हैं।

(vi) **मनोरंजनात्मक उपयोगिता** - खेल गतिविधियाँ, आनंद और तनाव से मुक्ति प्रदान करती हैं। ये बच्चों को संवेगात्मक रूप से संतोष देती हैं और उन्हें ऊबन से बचाती हैं।

(vii) **शैक्षिक उपयोगिता** - बच्चे खेलों के दौरान बहुत कुछ सीखते हैं खिलौने के द्वारा वे जैसे रंग, आकार, आकृति और बनावट आदि के बारे में सीखते हैं।

आपने ध्यान दिया होगा कि खेलों का कई गुणा महत्व होता है जैसे कि बच्चे स्वयं के प्रयास से बहुत सारी सूचनाएँ एवं ज्ञान एकत्र करते हैं। ये अनुभव बच्चे का अपने परिवेश के साथ रिश्ता मजबूत बनाने के साथ-साथ हमारे आस-पास क्या है, के बारे में सीखने हेतु इच्छा एवं प्रेरणा भी पैदा करते हैं।

संवेगात्मक तंत्रिका विज्ञान से संबंधित आधुनिक अनुसंधानों ने यह खुलासा किया है कि मस्तिष्क में खेल एवं न्यूरोजेनेसिस में महत्वपूर्ण संबंध होता है। यह इस बात पर बल देता है कि बच्चे शारीरिक, संवेगात्मक संज्ञानात्मक और सामाजिक पहलुओं को मिलाकर एक एकीकृत दृष्टिकोण से सबसे बेहतर सीखते हैं। सर्जियो पोलिस जैसे वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि खेल से प्राप्त हुए अनुभव हमारे मस्तिष्क के सामने के सिरे पर न्यूरान्स के संबंधों को बदल देते हैं।

11.3 खेलों के प्रकार

खेलों की विविध प्रकृति तथा सीखने में कौशलों एवं रुचि के विकास में खेल किस प्रकार सहायक हैं, के बारे में विभिन्न मनावैज्ञानिकों ने विभिन्न मत प्रकट किए हैं।

पियाजे (1945-1962) ने खेल के स्तर की व्याख्या इस प्रकार की है:

- **अभ्यास खेल :** यह संवेदी-गतिक अवस्था (0-2 वर्ष) से मेल खाता है। खेलों के दौरान भौतिक इंद्रियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवस्था में खेलों में बार-बार की जाने वाली शरीर की गतिविधियाँ, मुँह में वस्तुओं को रखना, थूक के बुलबुले बनाना, आदि शामिल है।
- **प्रतीकात्मक खेल :** यह तब प्रारंभ होता है जब बच्चे वस्तुओं को किसी चीज के प्रतीक के रूप में प्रयोग करने लगते हैं (2-7 वर्ष)। इस अवधि में एक सादृश्य मूलक प्रणाली विकसित होती है। बच्चे स्वाँग रचने लगते हैं, तथा काल्पनिक खेलों में सम्मिलित होने लगते हैं।
- **नियमों वाले खेल** - यह स्तर तब प्रारंभ होता है जब बच्चा जटिलता और उस पर थोपे गए नियमों को स्वीकार करने के लिए तैयार होता है (7-11 वर्ष)। खेल अधिक

संरचनात्मक हो जाते हैं। नियम विकसित होते हैं और खेल अब सामाजिक पहलू धारण करने लगते हैं।

स्माइलेंस्की (1968) ने खेल कौशलों को चार अवस्थाओं में बाँटा है:

- **व्यावहारिक खेल** – यह पहली अवस्था है जिसमें बच्चे वस्तुओं के साथ खेलते हैं। इस अवस्था में शारीरिक गतिविधियाँ और गत्यात्मक कौशल भी शामिल हैं।
- **रचनात्मक खेल** – इस अवस्था में बच्चा वस्तुओं का प्रयोग कुछ बनाने या निर्मित करने के लिए करता है। इसमें संवेदी गत्यात्मक गतिविधियाँ भी शामिल होती हैं जहाँ बच्चे अपनी सृजनात्मकता का प्रयोग करते हैं। बच्चे अपने परिवेश को समझना शुरू कर देते हैं और जो देखते हैं वैसा ही करना शुरू कर देते हैं।

चित्र 11.1 : रचनात्मक खेल गतिविधियों में संलग्न बच्चे

- **अभिनयपूर्ण या नाटकीय खेल** – बच्चे कुछ चीज़ों से कुछ बनाने के लिए कल्पना का प्रयोग करना शुरू करते हैं।
- **नियमों वाले खेल** – बच्चे प्रतियोगिता वाले खेलों में भाग लेते हैं। यह बच्चों को नियमों की अवधारणा को समझना सिखाता है, उन्हें नियमों को स्वीकार करना और नियमों के अनुसार खेल-खेलना सिखाता है।

पार्टन (1929) ने भी माना है खेल सामाजिक कुशलता बढ़ाने में सहायक होते हैं। पार्टन ने बताया है कि बड़े होने पर बच्चों के खेल बदल जाते हैं, और सामान्यता यह परिवर्तन 6 स्तरों पर होता है, पर उम्र का इससे सामान्यतया सम्बन्ध नहीं होता।

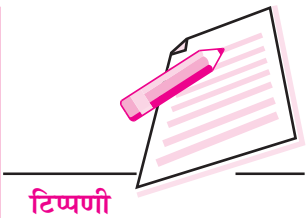

टिप्पणी

- **अव्यस्त खेल (Unoccupied play)**–बच्चे दूसरों के साथ बिल्कुल भी सक्रिय रूप से नहीं खेलते हैं या सक्रिय सहभागिता नहीं करते हैं। इस तरह के खेल जन्म से लेकर दो वर्ष तक के बच्चे खेलते हैं। ये खेल बाद के विस्तार और विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

- **एकल खेल (Solitary play)**–बच्चे प्राय: अकेले खेलते हैं। उनके खिलौने दूसरों से अलग तरह के होते हैं और वे दूसरों के खिलौनों के प्रति न तो रुचि दिखाते हैं और न ही उनको देखते हैं। यह प्रवृत्ति अपेक्षाकृत छोटे बच्चों में ज्यादा देखने को मिलती है। वैसे यह प्रवृत्ति हर उम्र के बच्चों के लिए लाभदायी होती है। एकल खेल से बच्चों में रचनात्मक शक्ति का विकास होता है।

- **दर्शक खेल (Onlooker Play)**–इस खेल में बच्चा दूसरों को खेलते हुए तो देखता है, पर वह इस खेल में शामिल नहीं होता। हो सकता है उस समय वे उसके सामाजिक महत्व पर सोच रहे हों या उस खेल के बारे और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हों। यह प्रवृत्ति ढाई और साढ़े तीन साल के बच्चों में ज्यादा देखी जाती है, पर ऐसा किसी भी उम्र के बच्चे कर सकते हैं।

- **समानान्तर खेल (Parallel Play)**–यह खेल भी ढाई और साढ़े तीन साल के बच्चे खेलते हैं, जो समान्तर साथ-साथ खेलते हैं परन्तु वे एक-दूसरे के साथ नहीं खेलते। वे एक ही प्रकार के खिलौनों या मिमिक से बारी-बारी से खेल सकते हैं। यद्यपि ऐसे समय में बच्चों में आपस में बहुत कम संपर्क होता है पर वस्तुत: इससे वे एक-दूसरे से बहुत अधिक सीखते हैं।

- **सहचारी खेल (Associative play)**–तीन-चार साल के बच्चे साथ-साथ खेलना प्रारम्भ कर देते हैं, पर वे सामूहिक लक्ष्य पर ध्यान नहीं देते। इस समय बच्चे अपने खिलौनों की अपेक्षा अपने आस-पास के बच्चों के साथ खेलना अधिक पसंद करते हैं। इस समय बच्चे अपने खिलौने बदल सकते हैं या फिर सक्रिय रूप से आपस में बातें करते हैं या फिर एक-दूसरे में खो जाते हैं। पर इस समय वे खेल के कोई नियम नहीं बनाते। इस समय वे आपसी सहयोग और समस्याओं के समाधान को ज्यादा आवश्यक मानते हैं।

- **सहकारी खेल (Cooperative play)**–सहकारी खेल वह खेल है जहाँ खेल समूहों में व्यवस्थित हो जाते हैं तथा उनमें टीम भावना देखने को मिलती है। बच्चे अब इस बात में रुचि लेते हैं कि वे क्या खेलते हैं तथा किसके साथ खेलते हैं। वे इस समय किसी को अपना नेता स्वीकार कर लेते हैं और साथ ही दी गयी भूमिका को भी स्वीकार कर लेते हैं। वे अपनी भूमिका का चुनाव कर लेते हैं और अपने समूह के लक्ष्य या खास लक्ष्य को ध्यान में रख कर खेलते हैं। ऐसा करके बच्चे संगठनात्मक कुशलता और सामाजिक परिपक्वता सीखते हैं।

पाठगत प्रश्न 11.1

1. कॉलम 'अ' का कॉलम 'ब' से उचित मिलान कीजिए–

कॉलम अ	*कॉलम ब*
क) अभ्यास खेल	(i) सादृश्य मूलक प्रणाली विकसित होती है।
ख) अभिनयपूर्ण खेल	(ii) स्माइलेंस्की द्वारा द्वारा दी गई खेल की पहली अवस्था
ग) प्रतीकात्मक खेल	(iii) बच्चा कल्पना का प्रयोग करता है
घ) व्यावहारिक खेल	(iv) खेल के दौरान इंद्रियों की अहम भूमिका

2. बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य–

   क) छः माह का एक बच्चा पार्क में बच्चा घूमाने वाली गाड़ी (Pram) में है तथा अन्य बच्चों को फिसल पट्टी पर ऊपर से नीचे फिसलते हुए देखता है। वह दर्शक खेल (Onlooker Play) का आनन्द ले रहा है।

   ख) दो वर्ष का एक बच्चा गुटखों को जोड़-जोड़कर टॉवर बना रहा है। यह रचनात्मक खेल का एक उदाहरण है।

11.4 खेल कैसे विकसित होते हैं?

विभिन्न विद्वानों ने यह माना है कि उम्र के अनुसार खेल में अन्तर होता है। पियाजे ने विभिन्न आयु वर्ग के खेल क्रम का वर्णन किया है। अन्य विद्वानों ने भी विभिन्न स्तरों पर खेल-क्रमों की चर्चा की है। खेल जैविक, सामाजिक, संवेगात्मक और बौद्धिक विकास के अनुसार बदल जाते हैं। एक छोटा बच्चा केवल अपने शरीर के अंगों से ही खेल पाता है। जैविक परिपक्वता सक्रियता और गतिशीलता बढ़ा देती है। जिसकी वजह से बच्चे खोजबीन करते हैं और स्व प्रेरणा से कार्य करने लगते हैं, जिससे उनकी सामाजिक स्वीकार्यता योग्यता और सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है। अन्ततः इस प्रकार बच्चे संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते हैं और उनकी बौद्धिक संवेदना में वृद्धि होती है।

हम प्रायः देखते हैं कि बच्चे एक छड़ी लेकर टग-बग, टग-बग की आवाज करते हुए घोड़े की तरह उछलते हैं। इस प्रकार के क्रियाकलाप उनके पुराने अनुभवों पर आधारित होते हैं। इस प्रकार के क्रिया-कलाप जैसे कि खुद को घोड़े के ऊपर बैठना, उनके पुराने अनुभवों पर आधारित होते हैं। ऐसे कार्यों से वे अपने आनन्द और अपनी रचनात्मक क्षमता को प्रकट करते हैं। बच्चे बड़े होने पर अपने खेलों में एक निश्चित पद्धति और क्रम को प्रदर्शित करते हैं।

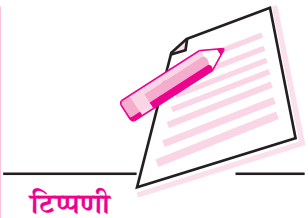

टिप्पणी

प्रथम दो वर्षों में खेल

संवेदी गत्यात्मक खेल, वस्तुओं से खेलना, प्रतीकात्मक और वयस्कों के साथ सामाजिक खेल, शिशु खेलों के मुख्य प्रकार हैं। बच्चों के इस समय के खेल उनके शरीर के परिचालन पर आधारित होते हैं और ऐसा करके वे अपने हाथों तथा पैरों के परिचालन हेतु संभावना तलाशते हैं।

संवेदी गत्यात्मक खेल तब होते हैं जब ऐंद्रिक और गत्यात्मक गतिविधियों की पुनरावृत्ति होती है। ऐसा वे अपनी खुशी के लिए कर रहे होते हैं, जब वे एक वर्ष की उम्र में पहुँचते हैं तो उनकी रुचि परिवेश की ओर मुड़ जाती है। क्योंकि तब वे चलना सीख जाते हैं और दूसरों से परिचित हो जाते हैं।

वस्तुओं के साथ खेलना 4 से 5 महीनों में आरंभ होता है क्योंकि इस समय तक बच्चों का आँखों तथा हाथों का समन्वय हो जाता है और वे आस-पास की चीजों को पकड़ने लगते हैं।

प्रतीकात्मक खेल 1 वर्ष के पश्चात आरंभ होते हैं। एक वस्तु को दूसरी वस्तु से स्थानापन्न करने की आदत छोटे बच्चों में प्रायः देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए, लकड़ी के टुकड़े को टेलीफ़ोन रिसीवर की तरह प्रयोग करना।

दूसरे वर्ष तक बच्चे वस्तुओं से खेलने में परिपक्व हो जाते हैं। आकार और आकृति (बनावट) के अनुसार वस्तुओं में अन्तर करने की उल्लेखनीय क्षमता इस समय तक बच्चों में विकसित हो जाती है। एक से डेढ़ साल के बच्चे वयस्क लोगों के साथ सामाजिक खेल खेलना शुरू कर देते हैं। अपनी उम्र के बच्चों तथा परिवार के सदस्यों के साथ, अगले कुछ वर्षों तक बच्चे खेलना जारी रखते हैं।

2-5 वर्ष आयु वर्ग

इस अवधि के दौरान सभी खेल अधिक उद्देश्यपूर्ण बन जाते हैं। सामाजिक खेल के लिए समूह का आकार बड़ा हो जाता है और सहयोग तथा समझौते के साथ खेल अधिक चुनौतीपूर्ण बन जाता है। बच्चे, खेल और खेल के साथियों के प्रति अधिक चयनशील हो जाते हैं, तथा चयन आयु और लिंग के आधार पर उनकी रुचियों के अनुसार होता है।

समानांतर खेल और एकल खेल-दो विशिष्ट प्रकार के खेल, दो वर्ष की आयु के पश्चात बच्चों में देखे जा सकते हैं। एकल खेल से तात्पर्य अकेले खेलने से और समानांतर खेल का अर्थ उसी समूह में, उसी खेल के स्वतंत्र रूप से खेलने से है। इस अवस्था में प्रतीकात्मक खेल में लगने वाले समय में वृद्धि होती है। इस आयु समूह की एक विशेषता नाटकीय खेल हैं। नाटकीय खेलों में बच्चे किसी दुकानदार या घर के किसी सदस्य की भूमिका निभाते हैं।

टिप्पणी

5-12 वर्ष आयु वर्ग

इस उम्र में बच्चे प्राथमिक विद्यालय में प्रविष्ट होते हैं। अब खेल के तरीके अधिक व्यवस्थित और नियमित हो जाते हैं। प्रतीकात्मक खेल धीरे-धीरे कम होने लगते हैं और खेल अधिक तार्किक और नियम आधारित होने लगते हैं। बच्चे प्रतियोगी और गंभीर खेल जैसे कि बॉस्केटबॉल, फुटबॉल, आदि, नियमों के अनुसार खेलने लगते हैं। प्रतिभागियों की संख्या (कम-से-कम दो) और उनका व्यवहार कुछ सख्त नियमों और समूह के नियमों द्वारा नियंत्रित होता है।

इस प्रकार खेल और खेल के उद्देश्य अलग-अलग आयु में अलग-अलग होते हैं। विभिन्न कौशलों के विकास के साथ ही खेल का स्वरूप भी बदल सकता है।

पाठगत प्रश्न 11.2

रिक्त स्थान भरिए-

(क) वस्तुओं के साथ खेल.....आयु में आरंभ होता है क्योंकि वस्तुएँ पकड़ने के लिए बच्चे आँख-हाथ का समन्वयन प्राप्त कर लेते हैं।

(ख) एक वस्तु का दूसरी वस्तु से स्थानापन्न करने की प्रक्रिया .....में होती है।

(ग) खेल तथा खेल के उद्देश्य ..... में .....अलग-अलग होते हैं।

(घ) 5-12 वर्ष की आुय के बच्चे नियमों को समझते हैं इसलिए.....तथा..... ..... खेलना पसंद करते हैं।

11.5 खेल और प्रारंभिक अधिगम के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना

अभी तक हमने बच्चों के अधिगम में खेल के महत्व पर विचार किया है। वातावरण आकर्षक और उपयुक्त होना चाहिए, जो बच्चों को खेलने तथा सीखने के लिए बाध्य करेगा। संवेदी उपकरणों के बिना, केवल खाली मैदान खेल के प्रोत्साहन के लिए पर्याप्त नहीं होता। प्रोत्साहन और लगन की कमी बच्चों के लिए सबसे बड़ी बाधा होंगी तथा इससे बच्चों में स्वस्थ सीखने की अभिवृत्ति के लिए स्वाभाविक जिज्ञासा एवं उन्मुखीकरण कम होगा।

यदि हम बच्चों के खेलने के तरीके को समझ लें तो हम उनके खेलने के लिए उचित वातावरण बना सकते हैं। खेल के साधनों और उपकरणों के प्रबन्ध से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों की गतिविधियों एवं उनकी खेल अभिरुचियों में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं। खुले और विस्तृत स्थान में बच्चे खुश होकर खेलते हैं, जबकि भीड़-भाड़ और संकुचित स्थान बच्चों की खेल-गतिविधियों में बाधा पैदा करते हैं।

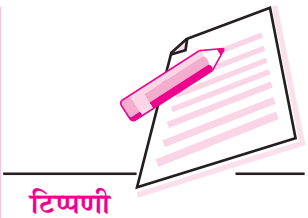

टिप्पणी

खेल सामग्री को बुद्धिमतापूर्वक व्यवस्थित करना महत्वपूर्ण है ताकि बच्चे सामग्री को आसानी से देख सकें तथा अपनी रुचि के अनुसार उनमें से चयन कर सकें। ऐसी प्रक्रिया बच्चों में रचनात्मक एवं सृजनात्मक खेलों के दौरान सहायक होती है। अन्तर्क्रिया करने या कभी-कभी किसी युक्ति के प्रदर्शन हेतु वयस्कों की उपस्थिति बच्चों के व्यवहार को अधिक स्वीकार्य तरीके से दिशा देने में सहायता करती है। मात्र प्रदर्शन के ध्येय से शेल्फ पर रखे गए खेल उपकरण बच्चों में अवांछित और हानिकारक व्यवहार विकसित कर सकते हैं। वस्तुओं का एक अच्छे रूप में व्यवस्थापन करने से अवांछित व्यवहार से बचा जा सकता है और यह बच्चों को प्रसन्न, सृजनात्मक, रचनात्मक, कल्पनाशील और जिज्ञासु बनाया जा सकता है।

कैसे डिजाइन करें: बच्चे जिज्ञासु, अन्वेषक और कल्पनाशील होते हैं। वे स्वयं वस्तुओं को छूना, स्वाद लेना, सूघंना, सुनना और देखना पसंद करते हैं। वे ऊर्जा से भरे होते हैं और चीजों पर ज्यादा देर तक ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं। इसलिए उनको रुचिपूर्ण कार्यों जेसे कि खेलने, कहानी सुनने, चित्र बनाने, रंग भरने, दौड़ने, कूदने, गाने में व्यस्त रखना चाहिए एवं अपने परिवेश में चीजों की खोजबीन करने देना चाहिए। ऐसी गतिविधियों के आयोजन से बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है। खिलौनों और उपकरणों की सबसे बेहतर व्यवस्था का निर्णय लेने के विभिन्न तरीके और पद्धितयाँ हैं। क्योंकि खेल का मुख्य उद्देश्य बच्चे का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास है, अत: आंतरिक और बाह्य सुविधाओं की व्यवस्था इस उद्देश्य को प्राप्त करने के उपयुक्त होनी चाहिए। इसके लिए उचित योजना की आवश्यकता है। हमें निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए:

(i) निरीक्षण और निर्देशन में सहजता तथा सरलता

(ii) सुरक्षा पर ध्यान

(iii) स्वतंत्र गति करने के लिए अधिकतम स्थान की व्यवस्था

(iv) रुचियों का ध्यान रखना

(v) समूह की आवश्यकताओं को पूरा करना

(vi) बच्चे की आवश्यकताओं को पूरा करना

(vii) विशेष क्रियाकलापों को पहले से तैयार स्थान में आयोजित करना

(viii) एक समान गतिविधियों को एक स्थान पर रखना तथा

(ix) खेल के लिए उपयोग में आने वाले शैल्फ और फर्नीचर उपयुक्त आकार एवं ऊँचाई के होने चाहिए। (गुप्ता, सेन-2013)

वातावरण किस प्रकार संरचित है यह भी बच्चों की शिक्षा के लिए एक सक्रिय सकारात्मक वातावरण बनाता है, जिससे उनकी संवेगात्मक कुशलता में वृद्धि होती है और उनके खेलने के लिए बहुत उपयुक्त और बेहतर अवसर प्राप्त होते हैं। खेल भाषायी विकास, पढ़ने और लिखने में तत्परता, संवेगात्मक परिपक्वता तथा सामाजिक कुशलता बढ़ाने में सहायक होता है। शैक्षिक वातावरण आनन्ददायक, प्रेरक, उत्साहवर्द्धक होना चाहिए और वहाँ निराशा और खतरे की आशंका नहीं होनी चाहिए।

टिप्पणी

आपसी सहयोग के अवसर प्राप्त होने पर सामाजिक विकास होता है वहीं आत्माभिव्यक्ति और आपसी संवाद से संवेगात्मक कौशल में वृद्धि होती है।

खेल उपकरणों का समायोजन मुख्य रूप से दो प्रकार से किया जा सकता है। यह कक्षा के अंदर और कक्षा के बाहर हो सकता है। इसे 'इनडोर' (आंतरिक) और 'आउटडोर' (बाह्य) व्यवस्था कहा जाता है।

11.5.1 आंतरिक व्यवस्था

खेल कक्ष में रखे जाने के लिए अनेक आंतरिक उपकरण हैं। सभी सामग्रियाँ इस प्रकार व्यवस्थित होनी चाहिए ताकि वे बच्चों की स्वयं की पहुँच में हों तथा व्यक्तिगत एवं बच्चों के सामूहिक उपयोग के अनुसार व्यवस्थित हों एवं उनका उपयोग उनकी अपनी राय तथा उनके अवलोकन को जानने में सहायता करेगा। आंतरिक व्यवस्था में पर्याप्त स्थान होना भी एक अनिवार्य तत्व है। नीचे कुछ का उल्लेख किया गया है:

(i) **गुड़िया-घर/अभिनय क्षेत्र :** एक कोना जिसमें घर से संबंधित वस्तुएँ जैसे पुराने थैली की एक टोकरी, सैंडल स्कार्फ एवं अन्य परिचित वस्तुएँ हों जो व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से, जिसमें 5 से 6 बच्चे हों, अभिनय करने में व्यस्त रखेगा। वे एक समय पर भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ निभाएँगे। उनका उपयोग उनकी अपनी राय तथा उनके अवलोकन को जानने में सहायता करेगा। वे घर से संबंधित विभिन्न उपकरणों को भी सँभालेंगे। अत: वहाँ पर्याप्त स्थान तथा पर्याप्त संख्या में उपकरण होने आवश्यक हैं। इसलिए कार्य की प्रकृति के अनुरूप खेल कक्ष का एक कोना इसके लिए सबसे बेहतर स्थान है। आवश्यकतानुसार पर्याप्त सामग्री होने से अधिक सामाजिक अंत:क्रिया हो सकेगी जहाँ वे साझा करना, दूसरे बच्चों की जरूरतों को पूरा करना और अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त करना सीख लेंगे।

(ii) **ब्लॉक्स या रचनात्मक क्षेत्र :** जैसा कि हम जानते हैं कि ब्लॉक्स का प्रयोग चीजों का निर्माण करने के लिए रचनात्मक खिलौनों के रूप में किया जाता है। ब्लॉक्स विभिन्न आकार और वजन के होने चाहिए। यदि एक से अधिक बच्चे ब्लॉक्स के साथ खेल रहे हैं तो दूसरों द्वारा जानबूझकर हस्तेक्षप किए जाने के अवसर बढ़ जाते हैं जिससे बनाए या निर्मित किए गए ढाँचे को हानि हो सकती है। ब्लॉक्स से खेलना, सीखने का एक उपयोगी साधन है। ब्लॉक खेल के लिए एक अलग से क्षेत्र स्थापित करना चाहिए क्योंकि ऐसे खेल कल्पना, सृजनात्मकता और सामाजिक कौशलों का विकास करते हैं। बड़े और भारी ब्लॉक्स को अपेक्षाकृत नीचे की शैल्फों पर रखना चाहिए ताकि वे बच्चों के पैर पर न गिरें।

इस प्रकार के खेल, स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक विकास को बढ़ाते हैं। यदि स्थान पर्याप्त हो तो विभिन्न प्रकार के खिलौने, बाइक, छोटी कारें, ट्रक, नाव, जीप, जानवर आदि को भी ब्लॉक्स के साथ रखा जा सकता है। खेल सामग्री का यह मेल अधिक उत्पादक, कल्पनात्मक और सृजनात्मक होगा।

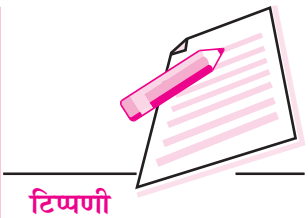

टिप्पणी

(iii) **पुस्तकालय, पुस्तकें एवं पहेली क्षेत्र :** इसके अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण चीजें जो खेल कक्ष में रखी जा सकती हैं, वे हैं पुस्तकें। पुस्तकें पढ़ने के लिए उपयुक्त प्रकाश और एकांत की आवश्यकता होती है। दो या दो से अधिक बच्चे मिलकर कोई पुस्तक पढ़ सकते हैं या उस पर चर्चा कर सकते हैं। एक कोना या बालकनी इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त रहेगा। एक कम ऊँचाई वाली कुर्सी तथा पुस्तक रखने के लिए एक मेज की आवश्यकता होती है। विभिन्न आयु वर्ग के लिए विविध प्रकार की पुस्तकें बच्चों में पढ़ने की रुचि उत्पन्न करने को प्रोत्साहित करेंगी। सामान्य पहेली (Puzzles) का संग्रह भी वहाँ रखा जा सकता है।

(iv) **कला क्षेत्र :** खेल कक्ष का एक हिस्सा चित्र बनाने, रंग करने और अन्य कला गतिविधियों के लिए होना चाहिए। इसके लिए स्थान का चुनाव वॉश बेसिन या शौचालय के पास करना चाहिए ताकि बच्चे रंग आदि करने या अपने हाथ धोने के लिए बिना दूसरों को बाधा डाले, पानी ला सकें। यदि कला सामग्री आसानी से छोटे बच्चे की पहुँच में है तो इससे न केवल वयस्कों के समय की बचत होगी बल्कि बच्चों को अधिक आत्मनिर्भर होने में सहायता मिलेगी।

इन सभी सामग्रियों के अतिरिक्त खोज कोना, संगीत एवं गतिक क्षेत्र तैयार करने हेतु माँसपेशियों के समन्वयन के लिए जोड़-तोड़ कर सकने वाले खिलौने, विज्ञान प्रयोग के उपकरण, पौधों के लिए जगह और संगीत यंत्रों की भी खेल कक्ष में व्यवस्था की जानी चाहिए। एक आन्तरिक खेल कक्ष की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए कि बच्चे स्वतंत्र रूप से गति कर सकें और सभी बच्चों की उनकी उम्र, लिंग और आकार को ध्यान में रखते हुए सामग्री आसानी से पहुँच में हो।

11.5.2 कुछ खेल सामग्री एवं खिलौने

उपलब्ध स्थान का डिजाइन विभिन्न प्रकार की खेल सामग्री से समृद्ध होना चाहिए जो कि बच्चों के लिए उपयुक्त एवं उपलब्ध हो। बच्चे पुरानी बोतलों के ढक्कन, पुराने अखबार, सूखी पत्तियों, कंकड तथा विविध सामग्रियों के खेलकर आनन्दित होते हैं। बच्चों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करने हेतु विभिन्न प्रकार की सामग्री एकत्र करना वास्तव मे चुनौतीपूर्ण है। खिलौनों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है:-

1. शारीरिक गति तथा मांसपेशीयों के विकास हेतु खिलौने।
2. रचनात्मक एवं सृजनात्मक खेल हेतु खिलौने।
3. नाटक एवं कल्पनात्मक खेल हेतु खिलौने।

खिलौनों एवं सामग्री की आयु वर्ग के अनुरूप व्यवस्था की जा सकती है। संभावित वर्गीकरण हेतु नीचे दी गई तालिका आपके लिये सहायक हो सकती है :

टिप्पणी

जन्म से 2 वर्ष	2 वर्ष से 4 वर्ष	4 वर्ष से 6 वर्ष
• ऊपर चढ़ने वाले फ्रेम, झूले • फिसलने वाली सामग्री • बड़ी आकर की गेंदें • दौड़ने वाले तथा खींचने वाले खिलौने • गाडियों, ट्रक इत्यादि पर जानवर • पहिये तथा बिना पहिये वाले डिब्बे • गाड़ियाँ, धक्का देने तथा खींचने वाले खिलौने	• पुराने टायर • कूदने वाले गढ्ढे • रसोईघर किट • ब्लॉक्स • चित्र वाली किताबें • पहेलियाँ • चित्र बनाने तथा रंग करने हेतु सामग्री • लिखने तथा पढ़ने हेतु खेल सामग्री	• संतुलन छड़ें • पानी के खेल • स्वीपिंग वस्तुएं या सामग्री • समूह खेल हेतु सामग्री (क्रिकेट, फुटबॉल) • फिसल पट्टी, मेरी-गो-राउन्ड जैसे झूले।

स्रोत– मनीसम, प्रेमलता एवं भार्गव, अमिता 2013

11.5.3 बाह्य व्यवस्था

विशेष खेल गतिविधियों हेतु बाह्य खेलों को भी वर्गीकृत किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, ट्राई साइकिल चलाने के लिए एक कंक्रीट की पगडण्डी होनी चाहिए, खेल उपकरणों के साथ सैण्ड पिट बनाया जाना चाहिए, जल-क्रीडा क्षेत्र, जंगल-जिम क्षेत्र; फिसलपट्टी, झूला झूलने का स्थान तथा दौड़ने के लिए बड़ा हरा क्षेत्र होना चाहिए। बाहरी खेल के स्थान पर्याप्त स्थान वाले होने चाहिए न कि सीमित। कुछ निश्चित खेल गतिविधियाँ बाह्य एवं आन्तरिक दोनों ही प्रकार से की जा सकती हैं।

बाहय खेल उपकरणों की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए कि स्थूल माँसपेशियों की गतिविधियों जैसे दौड़ना, चढ़ना, कूदना, फिसलना, रेंगना, खोदना, झूलना आदि के अधिक अवसर दिए जा सकें। बाहय खेल क्षेत्र में कुछ उपकरण जैसे-कूदने वाले गढढे, फिसल पट्टी आदि स्थायी रूप से लगाये जा सकते हैं। ये सही अनुपात में तथा छोटे बच्चों की पहुँच के भीतर ही होने चाहिए। बाहय खेल गतिविधियों के लिए शिक्षक का निरीक्षण बहुत आवश्यक है। कुछ उपकरणों की मौसम के परिवर्तनों जैसे सर्दी या गरमी की अपनी जरूरतों और खिलाड़ियों की सुविधा के अनुसार पुनर्व्यवस्था की जानी चाहिए।

11.5.4 सामूहिक और एकल खेल

हमने देखा है कि बच्चे अकसर स्कूल के मैदान या पास-पड़ोस में समूह बनाकर खेलते हैं। समूह अनुभव, पारिवारिक जीवन, लोकतांत्रिक रहन-सहन और सहयोग के मूल्यों को बढ़ाता है। बाल्यावस्था के प्रारंभिक वर्षो में खेल समूहों के निर्माण का बहुत महत्व है।

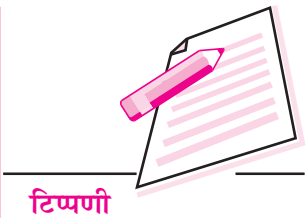

टिप्पणी

सामान्यत: बच्चे समान आयु और लिंग के समूहों का निर्माण करना चाहते हैं। इस प्रकार के समूह नेतृत्व क्षमता, ईमानदारी एवं निष्ठा की भावना और सामाजिक अधिगम को प्रोत्साहित करते हैं।

खेल समूहों का निर्माण बच्चों की साझा रुचियों, पृष्ठभूमि या गतिविधियों के आधार पर किया जाना चाहिए। प्री-स्कूल समय में बच्चे खेल के साथियों के रूप में ही समूह बनाते हैं। इन समूहों की अवधि समय-समय में बदलती रहती है। समूह के सदस्यों को सकारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए और कम-से-कम झगड़ना चाहिए।

समूह भिन्न-भिन्न आकार के बनाए जा सकते हैं–बड़े समूह, मध्यम समूह और छोटे समूह।

बड़े समूह : बड़े समूह पढ़ाने, कहानी सुनाने, संगीत, नृत्य एवं अन्य ऐसी ही गतिविधियों आदि के लिए बनाए जाते हैं। पूरी कक्षा को जिसमें विभिन्न योग्यताओं वाले बच्चे होते हैं, को बड़ा समूह मान लिया जाता है। उदाहरण के लिए-बड़े समूह के लिए गोलाकार में बैठाकर की जाने वाली गतिविधियाँ उपयुक्त होती हैं।

मध्यम समूह: क्योंकि बच्चे एक-दूसरे से भिन्न होते हैं अत: उनकी आवश्यकताएँ भी भिन्न होती हैं। एक बड़े समूह को 10-12 बच्चों के दो या तीन समूहों में बाँटा जा सकता है। शिक्षक उस समूह की सहायता कर सकता है जिसे अधिक निर्देशन और निरीक्षण की आवश्यकता होती है। अन्य समूहों को मुक्त खेलों या अन्य किसी बाह्य गतिविधि में जिसमें कम निर्देशन और निरीक्षण की आवश्यकता हो, व्यस्त रखा जा सकता है।

यदि कक्षा में स्थान कम है, तो बच्चों को दो या तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है तथा समूहों को क्रमवार ढंग से क्रियाकलाप कराया जा सकता है; उदाहरण के लिए, एक समूह बाह्य स्थान पर झूले आदि से खेल सकता है। उसी दौरान शिक्षक दूसरे समूह को विषयपरक शिक्षण करा सकता है एवं अन्य समूह को कोलाज बनाने को दिया जा सकता है।

छोटा समूह: जब व्यक्तिगत निर्देश या ध्यान देने की आवश्यकता होती है तो छोटे समूह बनाए जाते हैं। इन समूहों में छह से कम बच्चे होते हैं। बच्चे किसी एक विशेष कार्य को पूरा करने के लिए जोड़े में काम करते हैं। विभिन्न समूहों के लिए खेलने के अलग-अलग कोने होने चाहिए और एक समूह के बच्चों को दूसरे समूह के बच्चों की गतिविधियों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। अगर आवश्यकता हो तो बच्चे एक से दूसरे समूह में जा सकते हैं।

जीवन के प्रत्येक मोड़ पर बच्चों को अनेक विकासात्मक परिवर्तनों से गुजरना पड़ता है। खेल गतिविधियाँ भी उसी के अनुसार बदल जाती हैं। उम्र बढ़ने पर उद्देश्य रहित खेल उद्देश्यपूर्ण हो जाते हैं। शिक्षक और माता-पिता को बच्चों में होने वाले इन परिवर्तनों से परिचित होना चाहिए और उसी प्रकार कार्य करने चाहिए। प्रत्येक बच्चा शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक और बौद्धिक रूप से विकसित होता है परन्तु प्रत्येक बच्चे का विकास अलग प्रकार से होता है। भोजन, कसरत, खेल के प्रकार तथा वातावरण बच्चे के विकास के मुख्य कारक होते हैं। इसलिए शिक्षकों प्रशासकों का यह दायित्व है कि वे बच्चों के व्यायाम और खेल के उपयुक्त प्रबन्ध करें।

पाठगत प्रश्न 11.3

बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य–

(क) खेल सामग्री और अन्य उपकरणों की व्यवस्था बच्चों की गतिविधियों पर कोई प्रभाव नहीं डालती।

(ख) बाह्य खेल गतिविधियों के लिए शिक्षक द्वारा निरीक्षण बहुत आवश्यक है।

(ग) खेल गतिविधियाँ जिनमें झूलना, चलना, दौड़ना, कूदना, फिसलना आदि शामिल हैं, बड़ी माँसपेशियों के समन्वयन में सहायता करती हैं।

(घ) शिक्षक ओर माता-पिता को बच्चे के जीवन में आने वाले परिवर्तनों से परिचित होना चाहिए।

11.6 सभी आयामों के लिए खेल आधारित गतिविधियाँ

क्योंकि बच्चे खेलों के माध्यम से सीखते, बढ़ते और विकसित होते हैं, बच्चों के लिए आयोजित गतिविधियाँ खेल आधारित ही होनी चाहिए, जो विकास के सभी आयामों से संबंधित हों। विकास के आयामों को तीन भागों में रखा गया है:

1. संज्ञानात्मक तथा भाषा क्षेत्र
2. सामाजिक-संवेगात्मक क्षेत्र
3. मनोगत्यात्मक क्षेत्र

संज्ञानात्मक क्षेत्र के लिए गतिविधियाँ – बच्चा मूलभूत प्रत्ययों जैसे कि समय, संख्या, स्थान, स्थिति, आकार और ध्वनि के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है। संज्ञानात्मक विकास के अन्तर्गत संवेदनाओं का समुचित उपयोग, संप्रत्ययों की रचना (जैसे कि रंग, आकार, लम्बाई, संख्या, स्थान, परिणाम, ऊँचाई, वजन, गति, समय की अवधाारणाएँ) तथा मूलभूत संज्ञानात्मक कुशलताएँ आती हैं।

सुनने, ध्वनियों में अन्तर करने, विभिन्न धरातलों में अन्तर करने जैसे कि चिकना और खुरदरा, अच्छी और खराब गन्ध में अन्तर करना, विभिन्न रंगों को पहचानना, नृत्य और संगीत आदि संवेदी विकास तथा संप्रत्ययों की रचना के लिए उपयुक्त खेलों का प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

मूल संज्ञानात्मक कौशलों के विकास के लिये पहेली, कहानी को पूरा करना, चित्र को पूरा करना, विज्ञान के प्रयोग, मेमोरी, गेम, कहानियाँ, तार्किक रचनाएँ, (सोचना, तर्क करना और समस्या समाधान) पैटर्न बनाना, क्रम निर्माण करने जैसी गतिविधियाँ आयोजित करनी चाहिए।

भाषा सम्बन्धी विकास–भाषा का विकास पढ़ने और लिखने की तत्परता जैसी गतिविधियों जैसे कि मौखिक अभिव्यक्ति, श्रवण कौशल और शब्द भंडार के द्वारा तेजी से होता है क्योंकि ये

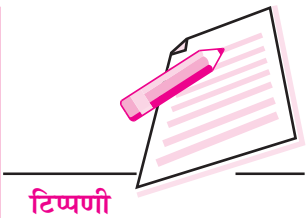

टिप्पणी

सभी भाषा के घटक हैं। पढ़ने और लिखने की आदत चित्रों, चित्रों वाली पुस्तकों, पत्रिकाओं, अखबारों, पेन्सिल, स्लेट (लेखन पट्टिका), बालू, क्रेयान, रंगों और ब्रशों के द्वारा विकसित की जा सकती है।

स्वतंत्र बातचीत जैसे कि चित्रों और वस्तुओं के माध्यम से बातचीत करना, कहानी सुनाना, अभिनय करना, रचनात्मक नाटक, कठपुतली नृत्य गुड़ियों से खेलना आदि मौखिक अभिव्यक्ति के लिए उपयोग किये जाते हैं। खेलों के बारे में सुनना, संख्यात्मक विभेदीकरण, निर्देश के अनुसार या कहानी के अनुसार आदि गतिविधियाँ श्रवण कौशल विकसित करने का सर्वोत्तम तरीका है।

संक्षेप में, बच्चों को विशेष क्रम में सीखने के संप्रत्ययों का बताया जाना चाहिए। उनमें से कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हैं–

1. आकार के अनुसार वस्तुओं को रखना। आकार (बड़ा, लम्बा, छोटा) तथा मात्रा (अधिक, कम)
2. चित्रों का मिलान।
3. पौधों, पशुओं, बादलों, बारिश, कार्यरत लोगों, दिन-रात आदि का अवलोकन।
4. छूना, अनुभव करना, चखना, सूँघना आदि।

भावात्मक क्षेत्र की गतिविधियाँ–बच्चों में रुचि, अभिरुचि, सौन्दर्य बोध की सराहना तथा आन्तरिक मूल्यों का विकास होता है। भावात्मक क्षेत्र की कुछ सुझाव हेतु गतिविधियाँ इस प्रकार हैं–

1. कहानियों की नाटकीय प्रस्तुति।
2. गाना गाना।
3. लय में कविताएँ सुनाना।
4. कलात्मक ढंग से गुड़ियों का सजाना।
5. किसी विषय पर बोलना।

बच्चे जब समूह में खेलते हैं तब वे सामाजिक और संवेगात्मक कुशलता आत्मसात करते हैं। वे सीखते हैं कि किस प्रकार साझा करते हैं, अपनी बारी आने पर ही क्रिया करते हैं तथा समझते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्ट पहचान है। खेल में व्यस्तता के दौरान वे अपनी सीमाओं को भी जानते हैं जैसे कि वे अपनी बारी आने का इंतजार करते हैं। यही क्षण बच्चों मे भावों की समझ के अवसर प्रदान करते हैं। यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि एकल या सामूहिक गतिविधि यों में संलग्न होने पर बहुत सी सामाजिक तथा संवेगात्मक क्षमताएं अर्जित होती हैं।

सामूहिक आयोजनों तथा त्योहारों की व्यवस्था के दौरान बच्चे खुश होते हैं तथा सामाजिक मूल्य सीखते हैं। बच्चों के सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास हेतु सामूहिक खेल, कार्य स्थल को सफाई, प्रत्येक बच्चे का जन्मदिन मनाना, अच्छे कार्य हेतु पुरस्कृत करना इत्यादि अनुभव बच्चों को दिये जा सकते हैं।

टिप्पणी

मनोगत्यात्मक क्षेत्र हेतु गतिविधियाँ – बच्चों में गतिविधियों के दौरान विविध कौशलों का विकास होता है। इसलिए, कार्यों को इस प्रकार से नियोजित किया जाना चाहिए कि बच्चों में सटीकता, संक्षिप्तता और एकाग्रता का विकास हो तथा सूक्ष्म एवं स्थूल गत्यात्मक कौशलों को बढ़ावा मिले।

शारीरिक एवं मांसपेशियों के विकास हेतु धकेलने-खींचने, फैंकने, पकड़ने, पैड़लिंग करने, रेंगने, कूदने, खींचने, घूमने, हिलने, झूलने, फिसलने, लुढ़कने तथा किक मारने जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त बड़े छेद एवं कई रंगों वाले लकड़ी के गुटखों को पिरोना, मुक्त हस्त अभ्यास, धागे की छपाई, पत्ती एवं सब्जी द्वारा छपाई, कागज के साथ कार्य (फाड़ना, काटना, कोलाज बनाना), गीली मिट्टी से विभिन्न आकार बनाना तथा सृजनात्मक खेल कुछ ऐसी गतिविधियाँ हैं जिनके द्वारा सूक्ष्म गत्यात्मक विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसके साथ ही रंग करना, चित्र बनाना, काटना, चिपकाना मोड़ना तथा क्ले मॉडलिंग इत्यादि भी मनोगत्यात्मक विकास में सहायक होते हैं।

इन सभी गतिविधियों को नियमित रूप से नियोजित किया जाना चाहिए तथा बच्चों को इन गतिविधियों को खेल-खेल में तथा प्रसन्न वातावरण में करना चाहिए।

11.6.1 थीम आधारित विषयों के लिए खेलों की योजना बनाना

बच्चे के परिवेश से जुड़े विविध विषय होते हैं। उदाहरण के लिए पेड़, जानवर, पक्षी, फूल, कीड़े-मकोड़े, आदि। इन थीम आधारित विषयों पर विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ नियोजित एवं विकसित की जाती हैं।

छोटे बच्चे हमेशा खेलना पसंद करते हैं। हम उन पर किसी विषय का ज्ञान थोप नहीं सकते। अत: इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए थीम से जुड़ी विषय आधारित खेल गतिविधियाँ सबसे अच्छा तरीका हैं। बच्चे की रुचि तथा आयु के अनुरूप ही विषयों की योजना बनानी चाहिए। विषय बच्चे के परिवेश से जुड़ा हुआ होना चाहिए। इससे बच्चों को परिचित विचारों को विस्तार देने की उनकी मूल क्षमता बढ़ेगी। वे अपने मूर्त अनुभवों एवं एंद्रिक अनुभवों द्वारा अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं। इससे बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लाभप्रद एवं आनन्ददायी पूर्व विद्यालयी कार्यक्रम तैयार होते हैं। विषय से जुड़ी गतिविधियाँ एक या दो सप्ताह के लिए आयोजित की जा सकती हैं। शिक्षक इस प्रकार के कुछ विषय चुन सकते हैं:

(क) बच्चा एवं बच्चे का परिवेश : सब्जियाँ, जानवर, फल, प्रदूषण, वाहन, आकाश, सूर्य, चाँद, उत्सव, आदि।

(ख) बच्चा एवं बच्चे के आस-पास के लोग: परिवार के सदस्य, पड़ोसी, मित्र, स्कूल, त्योहार, समुदाय सहायक, आदि।

बच्चों को मूर्त या ठोस अनुभव देने वाले विषय ही चुनने चाहिए। कुछ अन्य सुझावित विषय हैं–

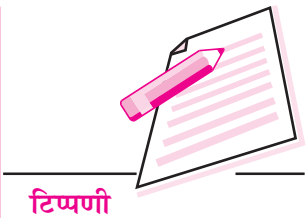

टिप्पणी

1. मैं
2. माँ
3. पिता
4. भोजन
5. पानी
6. कपड़े
7. अच्छी आदतें
8. मेरी सहायता करने वाले लोग
9. मौसम

पाठगत प्रश्न 11.4

रिक्त स्थान भरिए–

(क) विषयों की योजना बच्चों की.....और.....के अनुरूप होनी चाहिए।

(ख) वस्तुओं को उनके आकार के अनुसार क्रम में लगाना.....क्षेत्र की गतिविधि है।

(ग) .....संवेगात्मक क्षेत्र की गतिविधि का उदाहरण है।

(घ) स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों को विकसित करने वाली गतिविधियाँ..... क्षेत्र में आती हैं।

11.7 बच्चों के खेलों में शिक्षक की भूमिका

खेलों को अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए शिक्षकों को भी गतिविधियों का हिस्सा होना चाहिए। शिक्षकों का सही निर्देशन खेल की मात्रा तथा गुणवत्ता पर प्रभाव डालता है।

अवलोकनकर्ता के रूप में शिक्षक : शिक्षक कक्षा में और कक्षा के बाहर बच्चों की गतिविधि यों का अवलोकन करता है। वह देखता है कि बच्चे कैसे एक-दूसरे से अंत:क्रिया करते हैं, कैसे चीजों को संभालते हैं, क्या उन्हें अपने समूह में कोई समस्या या परेशानी है, आदि। बच्चा खेल सामग्री के साथ कितना समय बिताता है, शिक्षक इसका भी अवलोकन करता है। शिक्षक का उद्देश्यपूर्ण और स्पष्ट अवलोकन नई-नई खेल गतिविधियों की योजना बनाने और वर्तमान खेल स्थितियों को सुधारने में उसकी सहायता करता है।

सहायक के रूप में शिक्षक : बच्चों के विकास के लिए केवल खेल ही पर्याप्त नहीं है। यह शिक्षक का कार्य है कि वह सीखने के लिए खेल गतिविधियों को निर्देशित करे। उसे आवश्यकता और उद्देश्य के अनुरूप सामग्री की व्यवस्था तथा परिवेश का निर्माण करना होता है। यहाँ शिक्षक एक सहायक के रूप में कार्य करता है, दृश्य विभेदीकरण को परिष्कृत करने के लिए खिलौनों को व्यवस्थित करता है, बच्चे को स्वतंत्र रूप से खुलकर बोलने का अवसर

शिक्षक को देना चाहिए। उसे बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और उनमें जिज्ञासा उत्पन्न करनी चाहिए।

समीक्षक के रूप में शिक्षक : प्रत्येक गतिविधि के पश्चात शिक्षक को यह निश्चित करना होता है कि एक विशेष प्रकार के खेल ने किस प्रकार बच्चे की आवश्यकताओं को पूरा किया। शिक्षक को सुनिश्चित करना होता है कि खेल के उद्देश्य यानी कि संज्ञानात्मक, सामाजिक, शारीरिक वृद्धि, आदि खेल के दौरान हो रही है या नहीं। बच्चों में हो रहे परिवर्तन और सुधारों के बारे में शिक्षक को अभिभावकों व प्रशासकों के साथ संवाद बनाए रखना चाहिए। खेल परिवेश, सुविधाओं और गतिविधियों का आंकलन पाठ्यचर्या के लक्ष्यों के आधार पर किया जाना चाहिए।

आयोजक के रूप में शिक्षक : शिक्षक होने के नाते एक शिक्षक का प्रथम और सबसे महत्त्वपूर्ण कर्तव्य है बच्चों हेतु आनंददायक खेल परिवेश की तैयारी व आयोजन। शिक्षक को अर्थपूर्ण खेल गतिविधियों के लिए सामग्री व उपकरणों की व्यवस्था करनी चाहिए। कक्षा एवं बाह्य क्षेत्र की व्यवस्था सुरक्षित, आनन्ददायी और स्वस्थ वातावरण में करनी चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वातावरण रोचक, चुनौतीपूर्ण और प्रेरक होना चाहिए।

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा :

- प्रारंभिक बाल्यावस्था काल में सीखने के कौशलों के लिए खेल बहुत महत्वपूर्ण हैं।
- बच्चे के समग्र विकास में खेलों की मुख्य भूमिका होती है। अत: बच्चों को विकासात्मक उपयुक्त खेल सामग्री से विभिन्न खेल गतिविधियों में संलग्न रखना चाहिए।
- अनेक दार्शनिकों और मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों और प्रयोगों द्वारा खेल के महत्व को सिद्ध किया है।
- शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासकों को स्कूल और घर में बच्चों के लिए उपयुक्त आंतरिक और बाह्य सुविधाएँ प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए।
- बच्चों की विद्यालयी तत्परता को केवल खेल द्वारा ही बढ़ाया जा सकता है। शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि वे बच्चों का सही स्थान पर सही निर्देशन करें।
- गतिविधियों और खेल सामग्री की व्यवस्था व डिज़ाइन बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।
- खेलों को अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बनाने में शिक्षक महत्वपूर्ण व अनिवार्य भूमिका निभाता है। शिक्षकों का सही निर्देशन खेल के परिमाण एवं गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

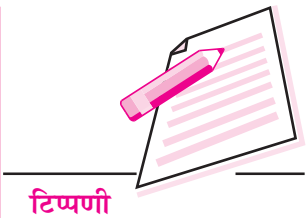

टिप्पणी

- बच्चे की रुचि व आयु के अनुकूल खेल गतिविधियाँ बनाने में थीम आधारित पद्धति मूर्त या ठोस अनुभव प्रदान करती है।
- क्योंकि बच्चा खेल के माध्यम से सीखता, वृद्धि और विकास करता है। अत: गतिविधियाँ खेल पर ही आधारित होनी चाहिए जो विकास के सभी क्षेत्रों-संज्ञानात्मक संवेदनात्मक या मनोगत्यात्मक को समाविष्ट करती हों।

पाठान्त प्रश्न

1. खेल के अर्थ एवं प्रकृति की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
2. प्रारंभिक वर्षों में खेल के प्रकारों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
3. खेल का विकास कैसे होता है?
4. निम्नलिखित हेतु कुछ गतिविधियाँ बनाइए:

   (क) स्थूल गत्यात्मक विकास

   (ख) भाषायी विकास

   (ग) सामाजिक विकास

   (घ) सृजनात्मकता और आत्माभिव्यक्ति का विकास
5. खेल गतिविधि योजना बनाने में थीम आधारित (Thematic Approach) पद्धति का क्या अर्थ है?
6. उद्देश्यपरक तथा अर्थपूर्ण खेल क्रियाकलापों के आयोजन के सन्दर्भ में एक अच्छे प्री-स्कूल शिक्षक के गुणों का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

1. (i) (क) (iv)
   (ख) (iii)
   (ग) (i)
   (घ) (ii)

   (ii) (क) सत्य
   (ख) सत्य

टिप्पणी

11.2

(क) 4–5 माह

(ख) प्रथम वर्ष

(ग) अलग–अलग आयु

(घ) फुटबाल, बास्केट बॉल (कोई भी नियमानुसार खेले जाने वाले खेल)

11.3

(क) असत्य

(ख) सत्य

(ग) सत्य

(घ) सत्य

11.4

(क) आयु, रुचि

(ख) संज्ञानात्मक

(ग) कहानियों का नाटकीकरण, कविता पाठन, गुड़िया सजाना आदि

(घ) मनोगत्यात्मक

संदर्भ

- Berk, L.E. (2003). *Child Development*. Delhi: Pearson Education Pvt. Ltd.
- Choudhary A., & Choudhary, R. (2002*). Preschool Children: Development, Care and Education.* New Delhi: New Age International Pvt. Ltd.
- Elizabeth, B. Hurlock. (1971). *Child Development*. Tokyo: McGraw-Hill Kogakusha, LTD.
- Gupta, S. (2013). *Early Childhood Care and Education*. Delhi: PHI Learning Private Limited.
- Maisnam, P., & Bhargava, A. (2013). *Early Childhood Education*. Agra: Harprasad Institute of Behavioural Studies.
- Smilansky, S. & Shefatya, L. (1990). *Facilitating Play: A medium for promoting cognitive, socio-emotional and academic development in young children*. Psychosocial & Educational Publications, Gaithersburg, Maryland.

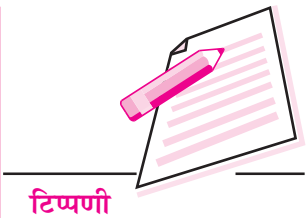

टिप्पणी

- Smith, Peter K., & Cowie, H. (1988). *Understanding Children's Development*. New York: Basil Blackwell.
- Soni, R. (2016). *Young Children in Motion*. New Delhi: NCERT.
- Soni, R. (2014). *Every Child Matters-A Handbook on Early Childhood Education*. New Delhi: NCERT.
- Subhash,P.D., & Yadav, P.(2012). In Pajankar,Vishal D.(Ed.). *Indian School Education System: A Holistic View* (pp25-57). New Delhi: Kunal Books.